بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

Office of The Sadr Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश खुत्बः जुम्अः सैय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीहिल अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक**25.08.2017** जलसा सालाना, जर्मनी।

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सच्च नबी माना है तो फिर आपका प्रत्येक कर्म हमारे लिए उस्वा-ए-हस्नः (सुन्दर आचरण) है, इबादतों के साथ साथ आपके उत्तम आचरण हमारे लिए नमूना हैं

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इश्क़ व मुहब्बत केवल ज़बानी दावा न हो, उसके केवल नारे ही न लगाए जाएँ बल्कि इस इश्क़ व मुहब्बत की अभिव्यक्ति आपके सुन्दर आचरण को अपनाकर होनी चाहिए।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- हम आज यहाँ जलसे में शामिल होने के लिए जमा हैं। जैसा कि प्रत्येक अहमदी जानता है कि हमारा यहाँ जलसे के लिए एकत्र होना किसी दुनियावी हा हू, शोर शराबे अथवा किसी सांसारिक उद्देश्य के लिए नहीं है अपितु इस लिए है कि यहाँ के प्रोग्रामों में शामिल होकर, एक रूहानी वातावरण में रहकर अपनी रूहानियत को बढ़ाएँ, अपने ज्ञान को बढ़ाएँ, अपनी आस्था की स्थिति को सुधारें, अपने कर्मों की क्षमता को बढ़ाएँ, अल्लाह तआला का तक़्वा धारण करें और अल्लाह तआला के हक़ तथा उसके बन्दों के हक़ अदा करें। अतः हमें अपने इस उददेश्य को सदैव अपने सम्मुख रखना चाहिए कि इस जलसे में शामिल होने का हमारा क्या लक्ष्य है।

इस समय मैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कुछ हवाले पेश करुंगा। इस बात को बयान फ़रमाते हुए कि आस्था का प्रभाव कर्मों पर भी होता है हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि इस्लाम के दो भाग हैं, एक तो यह कि ख़ुदा के साथ किसी को शरीक न किया जावे तथा उसके उपकारों के बदले में उसका पूर्णतः आज्ञापालन किया जावे। दूसरा भाग यह है कि सृष्टि के अधिकारों को पहचानकर पूर्ण रूप से उनको अदा किया जावे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- जो इंसान सच्चा और त्रूटि हीन विश्वास रखता है तथा ख़ुदा के साथ किसी को शरीक नहीं बनाता तो उसके कर्म स्वयं ही अच्छे हो जाते हैं और यही कारण है कि जब मुसलमानों ने सच्ची आस्था को छोड़ दिया तो अन्ततः दज्जाल इत्यादि को ख़ुदा मानने लग गए।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अभी दुनया में हम देखते हैं कि बड़े बड़े देश भी सांसारिक शक्तियों को ख़ुदा मानने लग गई हैं, उनकी झोली में गिरने लग गई हैं तथा यह आजकल हमें हर जगह नज़र आता है। लोगों से लेकर सरकारों तक का यही हाल है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- ख़ुदा ने मुझे बार बार कहा है कि अलख़ैरु कुल्लहू फ़िल क़ुर्आन। उसकी शिक्षा है कि ख़ुदा एक अकेला है उसके साथ कोई साझी नहीं, जो क़ुर्आन ने कहा वह पूर्ण सत्य है। सारी भलाईयाँ क़ुर्आन-ए-करीम में तलाश करो और अल्लाह तआला की इबादत करो, उसका हक़ बजा लाओ और जो बन्दों के हक़ हैं उनको भी अदा करो।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- इस सिलसिले की स्थापना का उद्देश्य ही यह है कि ख़ुदा तआला की मअरिफ़त प्राप्त हो तथा दुआ और इबादत की वास्तविकता का ज्ञान प्राप्त हो। आप फ़रमाते हैं कि जैसे पहला आदमी जो केवल

दुआ करता है और प्रयास नहीं करता, वह दोषी है। इसी प्रकार यह दूसरा जो युक्ति और प्रयास को पर्याप्त समझता है तथा नास्तिक है। परन्तु युक्ति तथा दुआ दोनों को परस्पर मिला देना इस्लाम है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- गुनाह और शिथिलता से बचने के लिए इतना प्रयास करे जो प्रयास करने का हक़ है तथा इतनी दुआ करे जो दुआ का हक़ है इसी कारण से क़ुर्आन शरीफ़ की पहली ही सूरः फ़ातिहः में इन दोनों बातों को सम्मुख रखते हुए फ़रमाया है कि जब मोमिन इय्याका नअबुदु कहता है कि हम तेरी ही इबादत करते हैं तो सहसा उसके मन में विचार आता है कि मैं क्या चीज़ हूँ जो अल्लाह की इबादत करूँ जब तक उसका फ़ज़्ल और करम न हो। इस लिए तत्पश्चात वह कहता है इय्याका नस्तअीन, सहायता भी तुझसे ही चाहते हैं। यह एक कोमल समस्या है जिसको इस्लाम के अतिरिक्त किसी अन्य धर्म ने नहीं समझा। किन्तु इस ज़माने में मैं देखता हूँ कि लोगों की यह हालत हो रही है कि वे युक्ति तो करते हैं परन्तु दुआ से ग़फ़लत की जाती है बल्कि साधनों की पूजा इतनी बढ़ गई है कि सांसारिक युक्तियों को ही ख़ुदा बना लिया गया है और दुआ पर हंसी की जाती है तथा उसको एक व्यर्थ की चीज़ समझा जाता है। यह सारा प्रभाव यूरोप के अनुसरण के कारण हुआ है। यह भयानक विष है जो दुनिया में फैल रहा है किन्तु ख़ुदा चाहता है कि इस ज़हर को दूर करे अतः यह सिलसिला उसने इसी लिए स्थापित किया है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- सब लोग याद रखो कि औपचारिक रूप से बैअत में दाख़िल होना अथवा मुझको इमाम समझ लेना इतनी ही बात मुक्ति के लिए बिल्कुल पर्याप्त नहीं है क्यूँकि अल्लाह तआला दिलों को देखता है, वह ज़बानी बातों को नहीं देखता। फ़रमाया- मुक्ति के लिए, जैसा कि अल्लाह तआला ने बार बार फ़रमाया है वही आवश्यक है और वह यह है कि प्रथम सच्चे दिल से अल्लाह तआला को एक अकेला माने तथा आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सच्च नबी समझे तथा क़ुर्आन शरीफ़ को अल्लाह की किताब माने कि वह ऐसी किताब है कि प्रलय तक अब कोई अन्य किताब अथवा शरीअत नहीं आएगी।

अनेक लोग है जो यह आपत्ति करते हैं कि इस सिलसिले की क्या आवश्यकता है, नया सिलसिला क़ायम कर दिया हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने आकर, क्या ज़रूरत थी? फ़रमाते हैं- क्यूँकि ईमान की हालत दुर्बल होते होते यह दशा हो गई है कि ईमान की शक्ति पूर्णतः प्रभाव रहित हो गई और अल्लाह तआला चाहता है कि वास्तविक ईमान की रूह फूंके जो इस सिलसिले के द्वारा उसने चाहा है, ऐसी दशा में उनकी आपत्ति व्यर्थ और निरर्थक है। अतः याद रखो कि ऐसा सन्देह कदापि किसी के दिल में नहीं आना चाहिए और यदि पूरे चिंतन और ध्यान से काम लिया जावे तो यह सन्देह आ ही नहीं सकता। हम वास्तविक शांति पैदा करना चाहते हैं जो इंसान को पाप की मौत से बचा लेती है और इन रीति रिवाजों का अनुसरण करने वाले लोगों में ये बातें नहीं, इनकी दृष्टि केवल दिखावे पर है वास्तविकता पर नज़र नहीं, इनके हाथ में छिलका है मग़्ज़ (गिरी) नहीं।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अतः जब आपकी नियुक्ति का लक्ष्य अल्लाह तआला से वास्तविक सम्बंध स्थापित करना है, आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पहचान कराना है, क़ुर्आन-ए-करीम की प्रधानता अपने ऊपर लागू कराना है तो हम जो आपके मानने वाले हैं हमें अपनी आस्थाओं तथा कर्मों का सुधार भी इसके अनुसार करना चाहिए। फिर हमें यह देखना होगा कि क्या हमारी बैअत यह वास्तविक रंग लिए हुए है अथवा केवल ज़बानी बातें ही हैं। क्या हमारी इबादतें अल्लाह तआला को एक अकेला समझते हुए उसके लिए हैं अथवा नहीं? बहुत से अहमदियों में से भी ऐसे हैं कि पाँच समय की नमाज़ें अदा नहीं करते तथा मिलने पर मुझे भी कह देते हैं, दुआ करें कि हम अदा किया करें। जबकि यह तो एक आधार है जो प्रत्येक अहमदी का फ़र्ज़ है, प्रत्येक मोमिन का कर्त्तव्य है, प्रत्येक मुसलमान का फ़र्ज़ है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आने के बाद तो दिल की रूचि से नमाज़ें अदा होनी चाहिएँ, न यह कि नमाज़ें ही पूरी न पढ़ें और आगे से कह दिया कि दुआ करें कि हम नमाज़ पढ़ लें। जब स्वयं अनुभव करते हैं कि हम नमाज़ें नहीं पढ़ते तो फिर कोई युक्ति भी करनी पड़ेगी, स्वयं प्रयास करना पड़ेगा। स्वयं प्रयास और दुआ क्यूँ नहीं करते। **इय्याका नअबुदु व इय्याका नस्तईन** जब कहते हैं तो केवल मुंह से कहने के बजाए शब्दों को दिल की गहराईयों से दोहराते हुए उसके अनुसार क्यूँ नहीं करते। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सच्चा नबी माना है तो फिर आपका प्रत्येक कर्म हमारे लिए सुन्दर नमूना है। इबादतों के साथ साथ आपका उत्तम आचरण हमारे लिए नमूना हैं। सामाजिक सम्बंध हैं, घरेलू सम्बंध हैं, बीवियों से उत्तम व्यवहार का नमूना आपने पेश फ़रमाया हमारे लिए परन्तु अनेक ऐसे हैं जो घरों में फ़साद पैदा करते हैं, उनके मन की भावनाओं का ध्यान रखना आपने हमें सिखाया, बच्चों से स्नेह पूर्वक

पेश आना आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमें सिखाया। अन्य लोगों की सामान्य भावनाओं का ध्यान रखना आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमें सिखाया, लड़ाई झगड़ों से बचना, आपने इसका आग्रह भी किया तथा हमें सिखाया और अपने व्यवहार से हमें दिखाया। जैसे भी हालात हों विनयता एंव विनम्रता दिखाना, सच्चाई के उत्तम नमूने स्थापित करना तथा कौनसा ऐसा आचरण है जिसका उच्चतम स्थान हमें आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में नज़र नहीं आता। यदि हम वास्तव में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सच्चा नबी मानते हैं और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को आपकी ग़ुलामी में भेजा हुआ ज़माने का इमाम मानते हैं तो फिर अपने कर्मों को भी, अपनी इबादतों के स्तरों को भी हमें बुलन्द करना होगा। क़ुर्आन-ए-करीम के आदेशों को देखकर, उसके निर्देश तथा निषेध कार्यों को देखकर हमें अवलोकन करना होगा कि कौन कौन सी नेक बातों को हम करने वाले हैं तथा कौन सी हम नहीं कर रहे। कौन सी बुराईयों को हम छोड़ रहे हैं तथा किन को हम नहीं छोड़ रहे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के स्तर और दावे को सही रंग में पहचानने की आवश्यकता है।

इस प्रकार यह ज़माना जो दुनया को अल्लाह तआला से दूर ले गया है तथा उन्नति के नाम पर प्रतिदिन, प्रत्येक आने वाला दिन, दूर ले जाने के लिए एक नया प्रयास करता चला जा रहा है ऐसे समय पर यह अहमदी का ही काम है कि अपने अल्लाह के साथ सम्बंध तथा अल्लाह तआला की मअरिफ़त प्राप्त करने का प्रयास करें तथा प्रत्येक चढ़ने वाला दिन इस मअरिफ़त में प्रगति करने वाला हो। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इश्क़ व मुहब्बत केवल ज़बानी दावा न हो, इसके केवल नारे न लगाए जाएँ बल्कि इस इश्क़ व मुहब्बत की अभिव्यक्ति आपके सुन्दर आचरण को अपना कर होनी चाहिए। यह नहीं कि नारे तो आपके नाम के लगा लिए तथा इसके बाद अत्याचार भी आपके नाम पर हो रहा है, आजकल के मुसलमानों की यही दशा है। अनेक संगठन बने हुए हैं, सरकारें भी तथा संगठन भी इस्लाम और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नाम पर अत्याचार कर रहे हैं। वह रहमतुललिल आलमीन जो पूरे ज़माने के लिए रहमत बनकर आया था, उनको उन्होंने अत्याचार का निशाना अपने अमलों से बना दिया है। यद्यपि उनके प्रयास सफल नहीं हो सकते इस लिए इस ज़माने में मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम आए थे और यही हम प्रयास करते चले जा रहे हैं कि इस्लाम का वास्तविक चित्र विश्व के सामने पेश करें।

अतः हमें इस वास्तविक चित्र को पेश करने के लिए आपके प्रत्येक आचरण को अपनाने का प्रयास करना चाहिए, क़ुर्आन-ए-करीम की प्रधानता अपने ऊपर लागू करने का प्रयत्न करना चाहिए तथा हर समय इस प्रयास में रहना चाहिए कि हमारा प्रत्येक कार्य नेक कर्म का प्रतीक हो। हमें यह प्रयास करना चाहिए कि हम हर पल इस प्रयास में हों कि हमने शैतान से दूर होना है और रहमान के निकट होना है अन्यथा जैसा कि आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि ग़ैर भी नमाज़ें पढ़ते हैं परन्तु उनकी अधिकांश नमाज़ें धरती पर ही रह जाती हैं वे अर्श (आसमान) पर नहीं जातीं। अर्श के ख़ुदा को इन नमाज़ों से कोई भी मतलब नहीं है क्यूँकि इनमें श्रद्धा नहीं है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- नमाज़ उस समय वास्तविक नमाज़ कहलाती है जब अल्लाह तआला से सच्चा और पाक सम्बंध हो तथा अल्लाह तआला की प्रसन्नता और आज्ञापालन में इतना अधिक लीन हो कि दीन की दुनया पर प्राथमिकता कर ले और ख़ुदा तआला की राह में जान तक दे देने और मरने के लिए तय्यार हो जाए। जब यह स्थिति इंसान में पैदा हो जाए उस समय कहा जाएगा कि उसकी नमाज़, नमाज़ है परन्तु जब तक यह यथार्थ इंसान के अन्दर पैदा नहीं होता तथा सच्ची श्रद्धा और वफ़ादारी का नमूना नहीं दिखलाता उस समय तक उसकी नमाज़ें तथा अन्य कर्म प्रभाव रहित हैं।

फिर यह बयान फ़रमाते हुए कि वास्तविक नेकी क्या है आप फ़रमाते हैं कि तक़्वा का अर्थ है बुराई के सूक्ष्म रास्तों से बचना किन्तु याद रखो नेकी इतनी ही नहीं है कि एक व्यक्ति कहे कि मैं नेक हूँ इस लिए कि मैंने किसी का माल नहीं उड़ाया, सेंद नहीं लगाई, चोरी नहीं करता, बुरी नज़र से नहीं देखता और व्यभिचार नहीं करता। फ़रमाते हैं- ऐसी नेकी आरिफ़ की दृष्टि में हंसी के योग्य है क्यूँकि यदि वह इन बुराईयों को करे तथा चोरी और डाका डाले तो वह दंड पाएगा। अतः यह कोई नेकी नहीं है कि जो आरिफ़ की दृष्टि में मूलयवान हो बल्कि असल और वास्तविक नेकी यह है कि मानव जाति की सेवा करे तथा अल्लाह तआला के लिए पूर्णतः सच्चाई एवं आज्ञापालन दिखलाए तथा उसके मार्ग में जान तक दे देने के लिए तय्यार हो। इसी लिए यहाँ फ़रमाया है- إِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّالَّذِيْنَ هُمْ مُّحْسِنُوْنَ अर्थात- अल्लाह तआला उनके साथ है जो बदी से बचते हैं और साथ ही नेकियाँ भी करते हैं। यह ख़ूब याद रखो कि केवल बुराई से बचना कोई विशेष बात नहीं जब तक उसके साथ नेकियाँ न करे।

बहुत बड़ी बड़ी बुराईयों में से एक बुराई और गुनाह झूठ है इससे बचने की ओर ध्यान दिलाते हुए एक अवसर पर हज़रत

मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि मैंने विचार किया है, क़ुर्आन शरीफ़ में कई हज़ार आदेश हैं जिनकी पाबन्दी नहीं की जाती। छोटी छोटी सी बातों में अवहेलना कर ली जाती है यहाँ तक कि देखा जाता है कि कुछ झूठ तो दुकानदार बोलते हैं तथा कुछ पंसारी झूठ बोलते हैं जबकि ख़ुदा तआला ने इसको गन्दगी के साथ रखा है परन्तु बहुत से लोग देखते हैं कि रंगीन बनाकर हालात बयान करने से नहीं रुकते तथा इसको कोई पाप भी नहीं समझते, हंसी के लिए भी झूठ बोलते हैं। इंसान सत्वादी नहीं कहला सकता जब तक झूठ के समस्त स्रोतों से न बचे।

एक उत्तम शिष्टाचार, दोष छिपाना लेना है जो केवल शिष्टाचार ही नहीं बल्कि इसके द्वारा इंसान अनेक झगड़ों और फ़सादों से भी बचता है तथा दुनया को भी बचाता है। अतः इस बात को बयान करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- मैं देखता हूँ कि जमाअत में आपस में बड़े झगड़े हो जाते हैं तथा तनिक तनिक से झगड़े से फिर एक दूसरे के मान सम्मान पर आक्रमण करने लगते हैं। ख़ुदा तआला का नाम सत्तार है फिर यह क्यूँ अपने भाई पर रहम नहीं करता तथा क्षमाशीलता और छिपाने से काम नहीं लेता, चाहिए कि अपने भाई के दोष को छिपाए तथा मान सम्मान पर हमला न करे। फ़रमाते हैं- एक छोटी सी किताब में लिखा देखा है कि एक बादशाह क़ुर्आन लिखा करता था एक मुल्ला ने कहा यह आयत ग़लत लिखी है। राजा ने उसी समय उस आयत पर वृत बना दिया कि उसको काट दिया जाएगा। जब वह चला गया तो उस वृत को काट दिया। जब राजा से पूछा गया कि ऐसा क्यूँ किया तो उसने कहा कि वास्तव में वह ग़लती पर था परन्तु मैंने उस समय वृत बना दिया कि उसका मान रह जाए। फ़रमाते हैं- यह बड़ी कटुता की जड़ और बीमारी है कि दूसरे के दोष को पकड़ कर ख्याति कर दी जावे। ऐसी बातों से आत्मा अशुद्ध होती है, इससे बचना चाहिए। अतः ये सारी बातें तक़्वा में दाख़िल हैं और भीतरी और बाहरी बातों में तक़्वा से काम लेने वाला फ़रिश्तों में दाख़िल किया जाता है क्यूँकि उसमें कोई अवज्ञा शेष नहीं रह जाती। फ़रमाते हैं- तक़्वा प्राप्त करो क्यूँकि तक़्वा के बाद ही ख़ुदा तआला की बरकतें आती हैं, मुत्तक़ी दुनया की कठिनाईयों से बचाया जाता है, ख़ुदा उनके दोषों को छिपाने वाला हो जाता है। फ़रमाते हैं कि बहुत से आदमियों की आदत होती है कि वे अपने भाईयों पर तुरन्त अपवित्र आरोप लगा देते हैं, इन बातों से बचो, मानव समाज को लाभ पहुंचाओ तथा अपने भाईयों से सहानुभूति तथा पड़ौसियों से नेक व्यवहार करो। अपने भाईयों से नेक सलूक करो तथा सबसे पहले शिर्क से बचो कि यह तक़्वा की सबसे पहली ईंट है।

अपने भाई के दोष को देखकर क्या व्यवहार करना चाहिए इसको और अधिक स्पष्ट करते हुए फ़रमाते हैं- मुझे अपनी जमाअत का यह बड़ा दुःख है कि अभी तक ये लोग आपस में छोटी छोटी बातों पर चिड़ जाते हैं। साधारण सभा में किसी को मूर्ख कह देना भी बड़ी ग़लती है। यदि किसी अपने भाई की ग़लती देखो तो उसके लिए दुआ करो कि ख़ुदा उसे बचा लेवे, यह नहीं कि मुनादी करो। जब किसी का बेटा बदचलन हो तो उसको तुरन्त कोई दूर नहीं करता बल्कि अन्दर एक कोने में उसे समझाता है कि यह बुरा काम है इसको छोड़ दो। अतः जैसे स्नेह, विनम्रता और युक्ति से अपनी संतान के साथ मामला करते हो वैसे ही आपस में भाईयों के साथ करो। जिसका आचरण अच्छा नहीं है मुझे उसके ईमान के विषय में चिंता है क्यूँकि उसमें अहंकार की एक जड़ है। यदि ख़ुदा प्रसन्न न हो तो मानो कि यह नष्ट हो गया।

तौबा करते रहो इस्तिग़फ़ार करो दुआ से हर समय काम लो। फ़रमाते हैं कि हमारे ग़ालिब आने के हथयार इस्तिग़फ़ार, तौबा, दीन की विद्या का ज्ञान, ख़ुदा तआला की महानता को सम्मुख रखना तथा पाँचों समय की नमाज़ों को अदा करना है। नमाज़ दुआ के क़बूल होने की कुंजी है, जब नमाज़ पढ़ो तो उसमें दुआ करो और ग़फ़लत न करो और प्रत्येक बुराई से चाहे वह अल्लाह के हक़ के विषय में हो चाहे बन्दों के हक़ के विषय में हो, बचो।

अल्लाह तआला हमें तौफ़ीक़ अता फ़रमाए कि हम इन स्तरों को प्राप्त करने वाले हों और आपकी बैअत में आकर आपकी नियुक्ति के उद्देश्य को समझने वाले तथा उसे पूरा करने के लिए अपनी समस्त प्रतिभाओं और क्षमताओं को उपयोग में लाने वाले हों तथा विश्व को भी इस वास्तविकता से अवगत कराने वाले हों।

TOLL FREE NO: 180030102131